ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 2 कुल पृष्ठ-8 23 से 29 नवम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. शु.-11

आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा (उ. प्र.) का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक 27, 28 व 29 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ आयोजित

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के साथ किया समारोह का उद्घाटन

वैदिक शिक्षा पद्धति की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा (उत्तर प्रदेश) का हीरक जयन्ती समारोह गत् दिनांक 27, 28 व 29 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 17 सितम्बर से 29 अक्टूबर तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति 29 अक्टूबर, 2023 को भव्य यज्ञशाला में की गई। विदित हो कि गुरुकुल एटा की यज्ञशाला विश्व प्रसिद्ध है। 27 अक्टूबर, 2023 को प्रातः 7 से 9.30 बजे तक यज्ञ, भजन व उपदेश का कार्यक्रम रहा। जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वेदपाल आर्य आचार्य ब्रह्मा एवं डॉ. सुरेश चन्द्र शास्त्री मुख्य संयोजक रहे। श्री शिवपाल आर्य, श्रीमती श्रुति शास्त्री व आचार्य अशोक शास्त्री के भजनों का कार्यक्रम रहा। 10.15 बजे ध्वजारोहण हुआ। आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् ध्वज का आरोहण कर पूरे समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपना संक्षिप्त उद्बोधन भी प्रस्तुत किया और आर्यों का आह्वान किया कि वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रतिष्ठित करने के लिए संकल्प लें। ओ३म् ध्वज हमें प्रेरणा देता है कि परमपिता परमेश्वर द्वारा बनाई गई इस सृष्टि में ईश्वरीय ज्ञान वेद को प्रचारित–प्रसारित करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही एक मात्र साधन है। वेद सभी प्रकार की संकीर्णताओं से दूर पूरे विश्व के कल्याण का ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य मात्र के लाभ के लिए दिया। वेद का ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरुकुलों में संस्कृत भाषा का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। अतः हम सभी लोग यह निश्चय करें कि अपने गुरुकुलों को हर दृष्टि से सक्षम बनायें। उद्घाटन सत्र मुख्य पण्डाल में प्रारम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री योगराज अरोड़ा ने की और इसके मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी रहे। इस सत्र में श्री विपिन वर्मा विधायक एटा, आचार्य ओम प्रकाश योगाचार्य पाली फरीदाबाद, डॉ. वेदपाल जी आचार्य पूर्व प्रधान परोपकारिणी सभा, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री, डॉ. बलवीर आचार्य महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, आचार्य प्रद्युम्न जी गुरुकुल खानपुर, डॉ. वागीश आचार्य प्राचार्य गुरुकुल एटा आदि विद्वानों एवं विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही तथा सभी के सारगर्भित विचार भी सुनने को मिले। इस सत्र के संयोजक गुरुकुल के मंत्री प्रो. विनय विद्यालंकार एवं सह संयोजक डॉ. अवनीश कुमार उपमंत्री ट्रस्ट तथा श्री संदीप सजर राष्ट्रीय कवि थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने इस सत्र में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए 'महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विश्व को देन' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को महर्षि दयानन्द जी पुनर्स्थापित करने वाले ऋषि थे। पांच हजार साल से सोये हुए भारत एवं विश्व को जगाने के लिए ऋषि दयानन्द ने वेद को अपनी विचारधारा का प्रमुख आधार बनाया और पूरे विश्व को एक सूत्र में बंधने का आह्वान किया। महर्षि ने जहाँ प्रचार का कार्य किया वहीं लेखन में भी वे पीछे नहीं रहे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञ विधि, गोकरूणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, वेदांग प्रकाश, व्यवहारभानु आदि ऐतिहासिक पुस्तकों के अतिरिक्त वेद भाष्य भी प्रारम्भ किया था जो वे पूरा नहीं कर पाये। कुल मिलाकर महर्षि दयानन्द जी ने लगभग 60 से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें से बहुत सारी उपलब्ध हैं। महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ महारथी थे और वेद के विरुद्ध प्रचलित मान्यताओं को चुनौती देते थे, जो कोई उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए आता तो उसे हार का मुंह देखना ही पड़ता था। महर्षि ने आर्ष शिक्षा एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया। उनके इस कार्य को स्वामी श्रद्धानन्द जी व स्वामी दर्शनानन्द जी ने क्रियान्वित किया। आर्ष गुरुकुल एटा महर्षि दयानन्द जी के विचारों और आर्ष शिक्षा को आगे बढ़ाने में पिछले 75 वर्ष से प्रयत्नशील रहा है इसकी स्थापना स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने की और आचार्य ज्योति स्वरूप एवं श्री देवराज शास्त्री जैसे समर्पित व्यक्तित्वों ने गुरुकुल की सेवा में अपने जीवन को समर्पित किया। गुरुकुल को अब नया परिवेश मिलना चाहिए और यहां पुनः उसी प्राचीन गौरव को प्राप्त करने के लिए अध्ययन–अध्यापन का कार्य प्रारम्भ होना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि इस दिशा में शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मूर्ति पूजा से हानियाँ

– हरबंस लाल चोपड़ा

एक बात स्पष्ट है कि मूर्तिपूजा की प्रथा नहीं है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री पं. जवाहरलाल जी नेहरू ने अपनी पुस्तक 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिखा है :–

''यह एक मनोरंजक बात है कि मूर्तिपूजा भारत में यूनान से आई। वैदिक धर्म हर प्रकार की मूर्ति तथा प्रतिमा पूजा का विरोधी था। वैदिक काल में देव मूर्तियों के किसी प्रकार के मन्दिर नहीं थे। बाद के सम्प्रदायों में कुछ–कुछ मूर्तिपूजा के चिन्ह पाए जाते हैं। इस पर भी यह बात पूरे जोर के साथ कही जा सकती है कि मूर्तिपूजा का बहुत व्यापक प्रभाव नहीं था। आरम्भ का बौद्धमत भी इसका घोर विरोधी था और बुद्ध की मूर्ति बनाने की मनाही के बारे में विशेष आदेश थे। यूनानी मूर्तिकला का असर अफगानिस्तान और सरहदी प्रान्त के चारों तरफ अधिक था और धीरे–धीरे वह भारत में प्रवेश कर गया। किन्तु फिर भी आरम्भ में बुद्ध की मूर्तियाँ न बनाकर यूनान के देवताओं जैसी बुद्ध से पहले बौद्ध अवतार की मूर्ति बनाई गई। और बाद में बुद्ध की मूर्ति भी बनाई जाने लगी। हिन्दू धर्म के कुछ सम्प्रदायों ने भी उनकी नकल की, किन्तु वैदिक धर्म इससे प्रभावित नहीं हुआ। फारसी और उर्दू में मूर्ति के लिए जो शब्द बुत प्रयोग में आता है, वह बुद्ध का ही अपभ्रंश है''। हिन्दू धर्म के भिन्न–भिन्न सम्प्रदाओं में मतभेद होते हुए भी एक बात पर सब सहमत है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सब धर्मों का आदि स्त्रोत है। आज हम भगवान् राम और कृष्ण की मूर्तियाँ ईश्वर के समान पूजते हैं। उनके जीवन–चरित्रों में कहीं भी इस बात का वर्णन नहीं मिलता कि वह किसी देवता की मूर्ति की पूजा करते थे, अपितु वह तो संध्या यज्ञादि धर्म करके अपना जीवन सफल बनाते थे। फिर न जाने हम इस नए जमाने का समर्थन करके उनके अनुयायी कैसे कहला सकते हैं। मूर्तिपूजा के पक्ष अथवा विरोध में कुछ न कहते हुए हम आपके सामने वह हानियाँ उपस्थित करते हैं जो मूर्तिपूजा के कारण हमें उठानी पड़ती है।

मूर्तिपूजा का मन कभी एकाग्र नहीं हो सकता। आप कहेंगे यह कैसे मूर्तिपूजकों का एक भाग जो सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव से यह मानने लग गया है कि परमात्मा की मूर्ति नहीं बन सकती अवश्य, किन्तु मन को एकाग्र करने के लिए किसी निशाने की आवश्यकता होती है। परमात्मा तो दिखाई नहीं देते, अतः मूर्ति के द्वारा हम मन के एकाग्र करने का अभ्यास कर सकते हैं। किन्तु इस युक्ति में कोई जान नहीं है। हमारा मन कभी उसके सुनहरी मुकुट की ओर जाता है, कभी उसके गोटा किनारी वाले कपड़ों की ओर लपकता है, कभी उसके कानों के कुण्डलों को निहारता है और कभी आँखों के काजल को देखता है। कभी उसके किसी अंग को देखकर कारीगर की प्रशंसा करता है और कभी उसके दूसरे अंग को देखकर कारीगर की निन्दा करता है। और मन्दिर के शंख और घड़ियाल कभी मन को लगने भी नहीं देते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि मूर्ति के कारण मन स्थिर होने के स्थान पर उसकी चंचलता बढ़ती है। सांख्य दर्शन का कहना है, 'ध्यानं निर्विषयं मनः' ध्यान का एकमात्र साधन यही है कि मन विषय रहित हो। जहाँ पाँचों ज्ञान इन्द्रियों के विषय कान का विषय शब्द, आँख का विषय रूप, त्वचा का विषय स्पर्श, वाणी का विषय रस तथा नाक का विषय गन्ध विद्यमान है, वहाँ ध्यान कैसे लग सकता है और मूर्ति के द्वारा तो न पाँचों इन्द्रियों का पोषण होता है, कठोपनिषद् का ऋषि परमात्मा को निर्विषय बताता है। इसी प्रकार भगवान् कृष्ण ने गीता में मन को एकाग्र करके चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में करके आसन पर बैठकर आत्मा शुद्ध करने का उपदेश दिया है। अतः यह सिद्ध हुआ कि जब तक मन का सम्बन्ध विषयों के साथ है वह ईश्वर में कदापि नहीं लग सकता और मूर्ति मन को एकाग्र करने में कभी सहायक नहीं हो सकती।

मूर्तिपूजा की दूसरी हानि यह है कि मूर्तिपूजक समझता है कि मूर्ति अर्थात् देवता अर्थात् ईश्वर केवल मन्दिर में है, मन्दिर से बाहर नहीं, अतः मन्दिर से बाहर याद न करने की उसे छुट मिल जाती है। आपने मूर्तिपूजकों को अक्सर यह कहते सुना होगा कि चलो मन्दिर में चलकर शपथ लो कि यह कार्य तुमने नहीं किया। मैं मूर्ति के सामने यह घोषणा करता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है सत्य कहा है। मन्दिर में मेरा कथन कदापि झूठ नहीं हो सकता। धीरे–धीरे मन्दिर के अहाते में पाप करने में भी उसे डर नहीं लगता और जब उसे कसम उठानी होती है तो मूर्ति पर हाथ रखकर शपथ लेता है। क्योंकि अब वह यह समझने लगा है कि परमात्मा केवल मूर्ति में ही है, अन्यत्र कहीं नहीं है। बात सीधी है मूर्तिपूजक का भगवान् एकदेशीय होता है, इस वास्ते जहाँ भी वह न हो वहाँ पाप करने में उसे झिझक नहीं होती। फिर मूर्ति पूजक की यह धारणा कि चाहे कितना ही बुरा पाप कर लूँ मूर्ति के दर्शन करने, उसका चरणामृत पीने, उस पर जल चढ़ाने, उसका प्रसाद बाँटने, उसके आगे माथा टेकने आदि से पापों के फल से छुटकारा मिल जायेगा अतः ''भैया भये कोतवाल डर काहे का'' वह जी खोलकर पाप करता है और जी खोलकर पापों की निवृत्ति भी करा लेता है। मूर्तिपूजक कहता है :–

अकाल मृत्यु हरण सर्व व्याधि विनाशनम्।
विष्णु पादोदकम्, पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

अर्थात् विष्णु का चरणामृत अकाल मृत्यु से बचाता है, सब बीमारियों को दूर करता है और पुनर्जन्म से छुटकारा दिलाता है।

जिसके पास ऐसी संजीवनी बूटी हो वह पाप करने से भला क्यों डरे।

मूर्तिपूजक का विश्वास होता है कि भगवान् भक्ति से प्रसन्न होते हैं, गुणों से नहीं। उन्होंने ध्रुव की आयु नहीं देखी थी। गज और ग्राह की लड़ाई में गज की रक्षा किसी विद्या के कारण नहीं की थी, दासी पुत्र विदुर की जाति नहीं देखी थी, कंस के पिता उग्रसेन की वीरता नहीं देखी थी, सुदामा का धन नहीं देखा था, परमेश्वर गुण नहीं देखते भक्ति देखते हैं।

अपि चेत्सु दुराचारो भजते मामनन्य भाव।
साधु रेव समन्तव्यः सम्यक व्यवसितो हि सि।।
अपि चेदसि पापेभ्यः सवैभ्य पाप कत्तमः।
सर्व ज्ञान प्लवेनैव वृजिन संतरिष्यासि।।
तेरा कहीं यदि पापियों से घोर पापा चार हो।
इस ज्ञान नैया से सहज में पाप सागर पार हो।।

जो अनन्य भाव से मुझे भजता है जो भक्त है यदि वह दुराचारी भी हो उसको साधु ही जानना चाहिए इस मान्यता का परिणाम है कि लम्पट साधू संन्यासी पण्डे और पुजारी कितने ही पापी और दुराचारी होते हुए भी पूज्य माने जाते हैं और उनको भंग सुल्फा आदि साधन भी दिये जाते हैं। हमारे पड़ोस में देवी का जागरण होता था और गाने वालों का नेता उस्ताद अथवा गुरु आगे बोलने वाला शराब पीकर बोलता था, क्योंकि उसके बिना सारी रात कैसे जागे। इस पर भी लोग जानते हुए उसे देवी का भक्त मानते थे। इससे सिद्ध होता है कि मूर्ति पूजक इस मान्यता के अनुसार घोड़े गधे को एक बराबर समझता है।

चारों वेदों में कहीं भी नहीं कहा गया है कि भगवान् की मूर्ति बना कर पूजनी चाहिए। मूर्ति किस चीज की बननी चाहिए सोने, चाँदी की, संगमरमर की, मिट्टी की, पीतल–ताँबे की, पत्थर की अथवा, सीमेन्ट की। और फिर कितनी बनाई जाएँ चार, आठ अथवा दस या बीस। वेद में तो स्पष्ट आता है :–

''न तस्य प्रतिमा यस्य नाम महद्यशा''

उस परमेश्वर की मूर्ति नहीं है, उसका नाम महान् यश वाला है। इससे सिद्ध होता है कि मूर्ति पूजा सर्वथा वेद विरूद्ध है और लोगों ने अपना उल्लू सीधा करने, भोले–भाले व्यक्तियों को फंसाने के लिए ढोंग चलाया था और लकीर के फकीर लोग अब भी उसी रास्ते पर चले जा रहे हैं। वास्तव में वेद विरूद्ध कर्मों का करना पाप और अधर्म है।

मूर्ति पूजा के कारण जो मन्दिर में अपार धन आता है, वह निरर्थक बन्द पड़ा रहता है। करोड़ों रुपये व्यय करके मन्दिर बनवाये जाते हैं। लाखो रुपये तुलसी सालग राम की शादी में खर्च कर दिये जाते हैं जबकि देश के अनगिनत लोगों को रात में भूखा सोना पड़ता है। उनके पास तन ढापने के लिए कपड़ा नहीं है, लाखों विधवाएँ असहाय होती हैं। लाखों अनाथ बालक भटकते फिरते हैं, देश में निर्धनता का नंगा नाच देखने में आता है। यदि यह करोड़ों ही नहीं अरबों रुपयों की धन राशि देश के हित में लगाई जाए तो देश का बेड़ा पार हो जाए और सभी निवासियों का भी कल्याण हो सकता है।

मूर्ति पूजा से देश में बेकारी बढ़ती है, हरिद्वार में चले जाइये, हजारों पण्डे हराम की कमाई पर पल रहे हैं। भिखमंगों की संख्या बढ़ रही है। सरकार चाहते हुए भी तीर्थ स्थानों को भिखमंगों से खाली नहीं करा सकती। हजारों बालक, बूढ़े स्त्री–पुरुष केवल दूसरों की कमाई पर पलना अपना अधिकार समझते हैं। अकेले जगन्नाथपुरी में ऐसे स्त्री–पुरुषों, बालकों, जवानों और बूढ़ों की संख्या दस हजार से कम नहीं जिनका काम दूसरों को ठगकर पेट पालने के सिवाय और कुछ नहीं है। देश में अनाज की कमी है किन्तु वहाँ दो हजार हाँडी चावल की प्रति दिन बिकती है और इस प्रकार बीस पच्चीस मन चावल पकाकर लोगों को खिलाकर देश में बेकार लोगों की संख्या बढ़ाई जाती है। इनमें सात सौ परिवार वह हैं जिनका कार्य केवल मूर्तियों का श्रृंगार करना है, उनके कपड़े बदलना है। दो हजार क्वांरी लड़कियाँ हैं जो मन्दिर में नाचती हैं और देव दासियाँ कहलाती हैं। ऐसी ही हालत अन्य बहुत से मन्दिरों में है। क्या मूर्ति पूजा से उपरोक्त हानि कुछ कम हानि है।

मूर्ति पूजा लोगों के अन्दर आलस्य, प्रमाद, निकम्मापन, भीरुता उत्पन्न करती है। अपने ऊपर भरोसा नहीं करने देती। मूर्तिपूजक समझने लगते हैं कि मूर्ति देश–विदेश के शत्रुओं से हमारी रक्षा करेगी यदि इनका बस चले तो फौजों को अवकाश दे दिया जाए और विदेशियों से जो संघर्ष चल रहा है, उसे इन मूर्तियों के हवाले कर दिया जाए और सभी लोगों को आदेश दे दिये जाएँ कि वह पैर फैलाकर बेफिकरी नींद सो जाएँ। मूर्ति अपनी तथा हमारी रक्षा स्वयं कर लेगी। ऐसा ही सोमनाथ के मन्दिर के ऊपर महमूद गजनवी के आक्रमण के समय हुआ था। कैसा उपहास बना रखा है भगवान् का इन मूर्ति पूजकों ने। दुःख की बात है कि देश से बुद्धिमत्ता वीरता का बहिष्कार इस मूर्ति पूजा ने कर दिया और घर–घर में मूढ़ता नपुँसकता का डेरा जमा दिया।

इस प्रकार से मन्दिरों में जो करोड़ों रुपयों की चढ़ावे की धन सम्पत्ति जमा हो जाती है तथा सोने, चाँदी के आभूषण, बरतन रेशमी कपड़े, शाल–दुशाले इकट्ठे हो जाते हैं। आक्रमणकारियों को आक्रमण का बुलावा देते हैं। चोरों डाकुओं के लालच का कारण बनते हैं, भूतकाल में ऐसी बहुत सी घटनाएँ घटी हैं जो उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि करती हैं। और भी अनेकों बुराइयाँ हैं मूर्ति पूजा की। किन्तु यहाँ इतना ही लिखना काफी है। देशवासी सोचें यदि आज की दुनिया में देश को ऊँचा उठाना है तो मूर्ति पूजा को छोड़ना होगा। केवल तपस्या के जीवन से ही देश की समृद्धि हो सकती है और देश शक्तिशाली बन सकता है।

वैदिक त्रैतवाद

– डॉ. सोमदेव शास्त्री

प्रत्येक वस्तु का कोई बनाने वाला (निर्माता) होता है तथा जिस पदार्थ से वह वस्तु बनती है वह पदार्थ भी होता है और जिसके लिए वह वस्तु बनाई गई है उस वस्तु का उपयोग करने वाला भी अवश्य होता है। इन तीनों के बिना वस्तु का निर्माण नहीं हो सकता और न ही उसकी उपयोगिता सिद्ध हो सकती है।

जैसे घड़े को बनाने वाला (निर्माता) कुम्हार होता है तथा मिट्टी से घड़ा बनता है और मिट्टी के घड़े का उपयोग करने वाला घड़े में पानी भरने वाला, घड़े के पानी को पीने वाला व्यक्ति भी होता है। यदि तीनों में से कोई एक भी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता और उसकी उपयोगिता भी सिद्ध नहीं हो सकती है। जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार हो और यदि मिट्टी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता है और यदि मिट्टी हो और घड़ा बनाने वाला कुम्हार न हो तब भी घड़ा नहीं बन सकता है। यदि घड़ा बनाने वाला कुम्हार और मिट्टी दोनों ही हों तब घड़ा तो बन जाता है किन्तु यदि घड़े का उपयोग करने वाला, घड़े को काम में लेने वाला न हो तो घड़े का निर्माण निरर्थक है। इसलिए घड़े को बनाने वाले के साथ घड़े का उपयोग करने वाले का होना भी आवश्यक है तथा जिस मिट्टी से घड़ा बनता है उसका होना भी आवश्यक है, ये तीनों ही घड़े के निर्माण में आवश्यक हैं इन सबका अपना महत्त्व है। इसी प्रकार भोजन, वस्त्र, मकानादि प्रत्येक पदार्थ में बनाने वाला, जिससे भोजन वस्त्रादि बनते हैं वह पदार्थ तथा जिसके लिए बनाया जाता है वह ये तीनों ही होते हैं। इन तीनों को शास्त्रीय भाषा में निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण कहते हैं। घड़ा बनाने वाले कुम्हार को घड़े का निमित्त कारण कहते हैं तथा जिस मिट्टी से घड़ा बनता है वह मिट्टी घड़े के उपादान का कारण है और जिसके लिए घड़ा बना है वह साधारण कारण कहलाता है।

इसी प्रकार इस सृष्टि को बनाने वाला परमेश्वर है, जिससे यह सृष्टि बनी है वह प्रकृति कहलाती है और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने किया है उसे जीवात्मा कहते हैं। इस सृष्टि में इन तीनों का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। यदि इन तीनों में से कोई एक भी न हो तो यह सृष्टि नहीं बन सकती है। यदि सृष्टि का बनाने वाला परमेश्वर ही हो और जिससे वह सृष्टि का निर्माण करता है वह प्रकृति न हो तो परमेश्वर सृष्टि नहीं बना सकता है और यदि प्रकृति ही हो और इसका बनाने वाला ईश्वर न हो तब भी सृष्टि अपने आप नहीं बन सकती है। क्योंकि जड़ पदार्थ में अपने आप क्रिया नहीं होती है। बिना कुम्हार के मिट्टी से घड़ा अपने आप स्वयं नहीं बनता है। वैसे ही जड़ प्रकृति से सृष्टि अपने आप नहीं बनती है। यदि ईश्वर और प्रकृति दोनों ही हों और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण होता है वह जीवात्मा न हो तब भी सृष्टि की कोई उपयोगिता नहीं होती है। यदि जीवात्मा न हो तो सृष्टि का निर्माण परमेश्वर किसके लिए करता है, उसका सृष्टि निर्माण करना निरर्थक होगा। इसलिए सृष्टि के निर्माण में जीवात्मा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ये तीनों ही आवश्यक हैं, इन तीनों के अनिवार्यता की दृष्टि से ही उनके लिए ''त्रैतवाद'' शब्द का प्रयोग किया जाता है। वेद में इन तीनों के अस्तित्त्व उपयोगिता और अनिवार्यता का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनशनन्न्योभिचाकशीति।। ऋग्वेद-1/164/2

अर्थात् ***ईश्वर और जीव दोनों चेतन और अनादि हैं तथा तीसरा अनादि कारण प्रकृति है। प्रकृति से बने हुए संसार रूपी वृक्ष का फल जीवात्मा भोग रहा है, तथा परमेश्वर इसका फल न खाता हुआ चारों ओर देख रहा है। अर्थात् सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने अपने लिए नहीं जीवात्मा के लिए किया है वही इस सृष्टि में कर्म करता और उनका फल भोगता है।***

महाभारत के युद्ध के पश्चात् वेदादि शास्त्रों के विपरीत अनेक विचारधारा प्रारम्भ हो गई। उन्हीं विचारधाराओं में ''वैदिक त्रैतवाद'' के स्थान पर द्वैतवाद-अद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवादादि विचारधाराओं का प्रचलन प्रारम्भ हुआ और जन सामान्य वैदिक त्रैतवाद के महत्त्व को भूल गया है। जड़ (प्रकृति) और चेतन (पुरुष) ये दोनों पृथक तत्व हैं जिनके परस्पर सहयोग से संसार बनता है। निमित्त (ईश्वर) और उपादान (प्रकृति) दोनों के द्वारा जीवात्मा के लिए सृष्टि की रचना होती है। इसके स्थान पर यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई कि इस सृष्टि का निर्माता निमित्त कारण परमेश्वर नहीं है। जड़ प्रकृति से ही सृष्टि अपने आप बन गई है। जड़ पदार्थों के परस्पर मिलने से अवस्था विशेष में चेतनता आ जाती है। जैसे दही और गोबर के मिलने से बिच्छू पैदा हो जाता है। वैसे ही पंच स्थूल भूतों-पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु और आकाश के विशेष सहयोग होने पर चेतन जीवात्मा बन जाता है। अर्थात् ''जड़ से ही चेतन बन जाता है'' यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई। जिसे चारवाक्, जैन बौद्धादि सम्प्रदायों ने प्रचारित किया। आधुनिक भौतिकवादी भी इसी प्रकार मानते हैं कि कुछ प्राकृतिक द्रव्यों के मिश्रण से प्रोटोप्लाज्म (जीवन) प्रारम्भ हो जाता है।

इस विचारधारा के ठीक विपरीत शंकराचार्य ने घोषणा की कि चेतन (ब्रह्म) से ही जड़ जगत् पैदा हुआ है। ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' का उद्घोष किया, उनकी विचारधारा को ''अद्वैतवाद'' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपनी मान्यता को स्थापित करने के लिए उदाहरण दिए हैं। केवल ब्रह्म ही जगत् का निमित्त और उपादान कारण है इसके लिए ब्रह्म से अतिरिक्त प्रकृति के मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे मकड़ी अपने अन्दर से ही जाला बनाती है वैसे ही चेतन ब्रह्म (परमेश्वर) ने अपने द्वारा ही यह संसार रूपी जाला बनाया है।

किन्तु मकड़ी के जाले का गहन चिन्तन करने से स्पष्ट होता है कि मकड़ी का शरीर मकड़ी के शरीर के अन्दर रहने वाला जीवात्मा ये दोनों मिलकर जाले को बनाते हैं। मरी हुई मकड़ी जाला नहीं बना सकती। इसी प्रकार बिना शरीर के केवल जीवात्मा भी जाला नहीं बना सकता है। इस उदाहरण से भी वैदिक त्रैतवाद की मान्यता ही पुष्ट होती है कि अकेला चेतन ब्रह्म परमेश्वर सृष्टि की रचना नहीं कर सकता है और अकेली प्रकृति जड़ भी सृष्टि की रचना नहीं कर सकती है अपितु चेतन और जड़ के सहयोग से निमित्त और उपादान कारण से जगत् की रचना होती है।

यदि चेतन ब्रह्म ही जगत् का (उपादान) कारण है तो सामान्य नियम है कि जो गुण (उपादान) कारण से होते हैं वे ही गुण उससे बने हुए कार्य पदार्थ में भी रहते हैं। जैसे मिट्टी के गुण मिट्टी के बने हुए घड़े में रहते हैं। वैसे चेतन ब्रह्म से जड़ जगत् कैसे बन गया। चेतन से जड़ता कैसे आ गई? ब्रह्म तो आनन्द स्वरूप है परन्तु इससे बने हुए संसार में दुःख क्यों है, यह प्रश्न जब अद्वैतवादी के समक्ष रखा जाता है तब सिद्ध करने के लिए श्री शंकराचार्य ने अपने शब्दों की रचना की और अपने ढंग से इनका अर्थ किया। वे कहते हैं कि एक परिणाम होता है और एक विवर्त होता है दूध को जमाने पर दही बनता है। दही दूध का परिणाम है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को मनुष्य प्रकाश पूरी तरह से न होने के कारण सांप समझता है और भयभीत होने लगता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को सर्प समझना ''विवर्त'' कहलाता है। रस्सी वास्तव में सांप नहीं है किन्तु भ्रम के कारण मनुष्य उसे सर्प समझता है, ठीक इसी प्रकार मनुष्य जिस जगत् को जड़ कहता है, प्रत्येक मनुष्य पृथक-पृथक् अपनी सत्ता स्वीकार करता है यह सब विवर्त है, भ्रम है। वास्तव में केवल ब्रह्म की ही सत्ता है और सारा संसार मिथ्या है। यह उनका प्रसिद्ध वाक्य है - ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'' अर्थात् ब्रह्म की सत्ता वास्तविक रूप में है, चेतन ब्रह्म का ही अस्तित्व है और सारा संसार मिथ्या - झूठा है, भ्रम है। संसार मिथ्या क्यों है? इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि जैसे स्वप्न में मनुष्य देखता है कि अपना भाई या पुत्र पास में खड़ा है किन्तु जैसे ही आँख खुलती है तो भाई या पुत्र पास में खड़ा नहीं दिखता है अर्थात् स्वप्न में देखी हुई वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता है वैसे ही संसार का वास्तविक रूप में अस्तित्व नहीं है। यह सब स्वप्न के समान भ्रम या मिथ्या झूठा है। जिस विवर्त शब्द की कल्पना करके रस्सी को सांप समझने का उदाहरण देकर शंकराचार्य और उनके अनुयायी अद्वैतवादी यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि जैसे सांप की सत्ता नहीं है वैसे ही जगत् का अस्तित्व नहीं है किन्तु उनके दिए हुए उदाहरण से ही स्पष्ट होता है कि सांप का अस्तित्व होता है उसकी सत्ता होती है इसलिए टेढ़ी-मेढ़ी रस्सी को देखकर टेढ़े-मेढ़े सांप का भ्रम होता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को देखकर टेबल-कुर्सी या छाते का भ्रम नहीं होता अपितु सांप का ही होता है क्योंकि रस्सी और सांप के टेढ़ेपन की समानता है। यदि कहीं पर भी सांप का अस्तित्व न होता और यदि मनुष्य ने सांप न देखा होता तो कभी भी उसे सांप का भ्रम न होता। रस्सी में सांप के भ्रम होने से ही सिद्ध होता है कि सांप की सत्ता है। इसी प्रकार विवर्त शब्द की कल्पना करके जिस जगत् को मिथ्या सिद्ध करने वाले अद्वैतवादियों को जगत् की यथार्थता, इसका अस्तित्व, इसकी सत्ता अवश्य ही माननी पड़ेगी। भले अपने मनस्तुष्टि के लिए इस जगत् को मिथ्या कहें किन्तु दूसरी जगह तो जगत् का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ेगा जिससे उस यथार्थ जगत् के आधार पर इस जगत् को मिथ्या कहने का दुःसाहस करते हैं।

स्वप्न का उदाहरण देकर भी लोगों को भ्रमित किया जाता है। जब कि वास्तविकता यह है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न अवस्था होती है। जागते हुए मनुष्य जो देखता सुनता है वे ही वस्तुएं स्वप्न में देखता है। जो व्यक्ति जन्म से अन्धा होता है जिसने कभी भी किसी भी पदार्थ को नहीं देखा उसे स्वप्न में भी कोई वस्तु नहीं दीखती है। इससे स्पष्ट है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न है, न कि स्वप्न अवस्था के अनुसार जागृत अवस्था। जागृत अवस्था में व्यक्ति के पास उसका भाई या पुत्र अनेकों बार खड़ा रहता है वे ही संस्कार स्वप्नावस्था में सक्रिय हो जाते हैं और स्वप्न में भी वैसा ही दीखने लगता है। इस विवेचन से भी यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न में जो चीजें दिखाई देती हैं वे जागृत अवस्था में अवश्य होती है। यह वर्तमान संसार स्वप्न के समान मिथ्या है तो, जागृत अवस्था के समान कहीं अवश्य ही यर्थाथ संसार मानना पड़ेगा जिसके संस्कार इस वर्तमान संसार में स्वप्न के समान प्रतीत हो रहे हैं। अर्थात् कहीं न कहीं तो संसार की यथार्थता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। जैसे बिना सांप की सत्ता को स्वीकार किये उसका भ्रम नहीं हो सकता है। वस्तुतः संसार मिथ्या नहीं है, अस्थिर है, नित्य नहीं है अनित्य है जैसा कि यजुर्वेद ..... 40/1 में कहा है ''ईशा वास्यमिदं सर्वं यतकिंच जगत्यां जगत्''।। अर्थात् ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, नित्य है, ऐश्वर्यशाली है, यह जगत् चलायमान अस्थिर अनित्य है गतिशील है। संसार का प्रत्येक पदार्थ विनाश की ओर जा रहा है। जगत् को जगत् इसलिए कहते हैं कि - ''गच्छतीति जगत्'' जो चल रहा है वह जगत् है, संसरति इति संसारः जो संसरण कर रहा है वह संसार है। जगत् और संसार की अस्थिरता का अतिश्योक्ति रूप से इसे मिथ्या कहकर लोगों को भ्रमित किया है। यथार्थता यह है कि ब्रह्म का भी अस्तित्व है और जगत् का भी अस्तित्व है। अन्तर केवल

शेष पृष्ठ 6 पर

श्रीमती द्रौपदी देवी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल सोनई (मथुरा), उत्तर प्रदेश का वार्षिक समारोह 21 नवम्बर, 2023 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने समारोह की अध्यक्षता की

श्रीमती द्रौपदी देवी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल सोनई, जिला–मथुरा, उत्तर प्रदेश की स्थापना स्वर्गत आचार्य धर्मजित जिज्ञासु ने अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीया द्रौपदी देवी की स्मृति में की थी। उन्होंने इस विद्यालय को क्षेत्र के गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए स्थापित किया था। विद्यालय का वार्षिक समारोह 21 नवम्बर, 2023 को धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में जिला पंचायत हाथरस की अध्यक्ष श्रीमती सीमा उपाध्याय मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुई। समारोह में प्रातः यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा पद को कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस की प्रधानाचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार ने सुशोभित किया और उन्होंने बड़ी विद्वता पूर्वक यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ के उपरान्त स्वामी सोम्यानन्द (श्री सोहन लाल शर्मा) मथुरा ने ध्वजारोहण किया और कार्यक्रम मुख्य पंडाल में प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए गांव सोनई के प्रतिष्ठित विद्वान् श्री धर्मेन्द्र कौशिक ने स्वर्गीय आचार्य धर्मजित जिज्ञासु एवं उनके परिवार की प्रशंसा में अनेक महत्त्वपूर्ण संस्मरण सुनाये। उन्होंने बताया कि आचार्य धर्मजित जिज्ञासु न केवल सोनई गांव के बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिन्होंने हमारा सम्मान पूरे प्रदेश में बढ़ाया। उन्होंने कहा कि आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी के पूज्य पिता श्री लीलाधर शर्मा तब के आर्य समाजी, समाजसेवी थे। उन्होंने पूरे क्षेत्र में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाया था और इस क्षेत्र के सभी लोग उनसे परिचित थे। स्वर्गीय जिज्ञासु जी के सभी पुत्र एवं पुत्रियाँ अपने माता–पिता के संस्कारों से ओत–प्रोत हैं, यह हम सबके लिए बड़े गर्व की बात है।

गांव सोनई के निवासी एवं पूर्व प्रधानाचार्य श्री गंगाधर पारासर ने भी अपने उद्गार इस अवसर पर प्रकट किये।

उन्होंने प्रस्ताव रखा कि स्वर्गीय आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी की जीवनी तैयार की जाये ताकि भावी पीढ़ियों को उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त हो सके।

स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि सुदूर अमेरिका में आर्य समाज की पहली इकाई की स्थापना 1975 में आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी के कर–कमलों द्वारा हुई थी। अतः वे एक इतिहास पुरुष थे। वे स्वतंत्रता सेनानी थे और महात्मा गांधी की हत्या के दिन 30 जनवरी, 1948 को वे गांधी जी के साथ विरला भवन में उपस्थित थे। स्त्री शिक्षा के वे प्रबल समर्थक थे। वे जहां आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान् थे वहीं अत्यन्त प्रतिभावान व्यक्तित्व के धनी भी थे। उनका पूरा परिवार अमेरिका में रहते हुए भी अपने गांव से आज भी जुड़ा हुआ है। स्वर्गीय आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी के पुत्र एवं पुत्रियाँ श्रीमती द्रौपदी देवी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल को निरन्तर उन्नति करते हुए देखना चाहते हैं और हर प्रकार का सहयोग इस विद्यालय के लिए देते रहते हैं। आचार्य जी की सुपुत्री डॉ. देवबाला जी एक उच्चकोटि की विदुषी हैं और प्रखर वक्ता होने के साथ–साथ स्पष्टवादी भी हैं। विद्यालय की उन्नति में डॉ. देवबाला जी के अतिरिक्त डॉ. स्नेहबाला जी, डॉ. नरेन्द्र जी व श्री हरिश्चन्द्र शर्मा की भूमिका उल्लेखनीय है।

इस कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भी आचार्य धर्मजित जिज्ञासु के जीवन पर एक नाटिका प्रस्तुत की तथा गीतों के द्वारा भी उपस्थित श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

जिला पंचायत हाथरस की अध्यक्ष श्रीमती सीमा उपाध्याय ने आचार्य धर्मजित जिज्ञासु परिवार को अपनी ओर से बधाई देते हुए कहा कि उनका क्षेत्र के गरीब लोगों के बच्चों की पढ़ाई में दिया जा रहा योगदान सदैव स्मरण किया जायेगा। उन्होंने स्वर्गीय आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी तथा माता द्रौपदी देवी जी को अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि भी दी। कार्यक्रम में स्वामी ब्रह्मानन्द हाथरस, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार सासनी, स्वामी सोम्यानन्द आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री चन्द्रमोहन रावत ने अपने स्टाफ के सदस्यों के साथ समारोह की व्यवस्था को संभाला। कार्यक्रम के उपरान्त सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आगन्तुक अतिथियों के लिए प्रीति भोज की भी व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह के उपलक्ष्य में विद्यालय के भवन का भी नवीनीकरण किया गया था।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा (उ. प्र.) का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक 27, 28 व 29 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

अवश्य ही प्रयास होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के डीन डॉ. सुरेन्द्र कुमार, मुनि सुचिसद् सुल्तानपुर, आचार्य नीरज शास्त्री मुम्बई, श्री शिशुपाल सिंह यादव पूर्व विधायक, श्री हरिदेव शास्त्री दिल्ली व श्री धर्मदेव शास्त्री मुम्बई, श्री वीरपाल शास्त्री, श्री मेधाव्रत शास्त्री आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। उद्घाटन सत्र के उपरान्त 2 से 3.30 बजे तक यज्ञ सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. सुरेशचन्द्र शास्त्री ने की और उसके मुख्य वक्ता आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी थे।

3.30 से 5.30 बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें स्व. आचार्य देवराज शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती शारदा शास्त्री ने अध्यक्षता की तथा डॉ. पवित्रा जी विद्यालंकार, श्रीमती श्रुति शास्त्री, श्रीमती सुधा गुप्ता अध्यक्ष नगर पालिका एटा, श्रीमती अरूषि शर्मा आदि विदुषियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

रात्रि को 7 से 9 बजे तक संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. वागीश आचार्य ने की। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अवनीश कुमार ने किया तथा प्रो. कमलेश चौकसी अहमदाबाद, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रो. विनय विद्यालंकार, आचार्य हेम कुमार विद्यावाचस्पति, प्रो. सुरेन्द्र कुमार जी रोहतक, प्रो. ओमनाथ विमली दिल्ली विश्वविद्यालय आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

28 अक्टूबर, 2023 को यज्ञ के उपरान्त वेद सम्मेलन, गो–कृषि आदि रक्षा सम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा स्नातक सम्मेलन एवं राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का कार्यक्रम रहा।

29 अक्टूबर, 2023 रविवार को चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ और कार्यक्रम का उपसंहार किया गया। इन दोनों दिनों में प्रो. ज्ञान प्रकाश शास्त्री, श्री सुरेशचन्द्र आर्य, श्री आशीष यादव एम.एल.सी., प्रो. राम प्रकाश वर्णी, प्रो. धर्मेन्द्र शास्त्री दिल्ली आदि अनेक विद्वान् राजनेता सम्मिलित रहे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का शताब्दी समारोह 7 व 8 नवम्बर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु रहे मुख्य अतिथि

आर्य समाज की प्रतिष्ठित संस्था कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की स्थापना 8 मई, 1923 को आचार्य रामदेव जी के कर–कमलों से हुई थी। इस गुरुकुल से सैकड़ों विदुषियों एवं हजारों संस्कारित तथा शिक्षित छात्राओं का निर्माण हुआ जो इसकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। कन्या गुरुकुल की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गत् 7 व 8 नवम्बर, 2023 को शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य जगत के यशस्वी संन्यासी एवं सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। शताब्दी समारोह के आयोजन में गुरुकुल कांगड़ी के मुख्य अधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा, कन्या गुरुकुल की प्रधानाचार्या डॉ. संतोष आर्या एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु व कुलसचिव डॉ. सुनील कुमार तोमर का विशेष योगदान रहा। उनके अतिरिक्त कन्या गुरुकुल की समस्त स्नातिकाओं ने भी दल–बल सहित पहुंचकर समारोह को सफल बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्नातिका मण्डल की अध्यक्षता डॉ. सरोज दीक्षा का इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का मंच संचालन गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के युवा विद्वान् डॉ. योगेश शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम में कन्याओं के अभिभावकों के अतिरिक्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रमुख पदाधिकारियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इनमें श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, श्री शत्रुघ्न मौर्य, श्री अशोक वर्मा, श्री ओम प्रकाश मलिक, श्री मानपाल सिंह, श्री तेलूराम आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ 7 नवम्बर को प्रातः 21 कुण्डीय यज्ञ से हुआ। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण करके समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। समारोह में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी योगेश्वरानन्द जी तपोवन आश्रम, स्वामी आदित्यवेश जी महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, डॉ. धनंजय आचार्य गुरुकुल पौंधा, डॉ. अन्नपूर्णा कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली देहरादून आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद बागपत) ने ऑन लाईन संदेश देकर समारोह में अपनी भागीदारी की।

कार्यक्रम के दौरान स्वामी आर्यवेश जी ने नारी जाति के सम्मान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'माता निर्माता भवति' की सूक्ति को चरितार्थ करने के लिए यह आवश्यक है कि बालक और बालिकाओं को शिक्षित एवं संस्कारित होना चाहिए। विदित हो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समय महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया हुआ था। उस समय बड़े–बड़े धर्म गुरु 'स्त्री शूद्रो न धियताम्' जैसी घोषणाएँ करके स्त्रियों और शूद्रों को पढ़ने रोकते थे, किन्तु महर्षि दयानन्द जी ने महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए प्रचण्ड अभियान चलाया। उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा आदि कुरीतियों के विरुद्ध जन–चेतना प्रारम्भ की और विधवा विवाह की परम्परा को आगे बढ़ाया। आज महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रारम्भ किये गये स्त्री शिक्षा के अभियान के परिणाम स्वरूप महिलाओं को शिक्षा का मौलिक अधिकार प्राप्त हो चुका है। कोई भी वर्ग या समाज उन्हें पढ़ने से रोक नहीं सकता। महर्षि की यह स्त्री जाति के लिए महत्त्वपूर्ण देन है। कन्या गुरुकुल देहरादून ने पिछले 100 वर्ष में हजारों बेटियों को शिक्षित एवं संस्कारित किया है। आज हम इस गुरुकुल के संस्थापक एवं उन सभी सहयोगियों को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं कि उन्होंने स्त्री शिक्षा में एक मजबूत मील का पत्थर कन्या गुरुकुल देहरादून के रूप में स्थापित किया। स्वर्गीया माता दमयन्ती कपूर की इस गुरुकुल के संचालन में जो भूमिका रही है वह कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकती। स्वामी जी ने आर्यजनों का आहवान किया कि कन्या गुरुकुल को पुनः उसके प्राचीन गौरव को प्राप्त कराने के लिए विशेष योजना बनाई जानी चाहिए और इसके विकास के लिए सभी को कृत–संकल्पित होना चाहिए।

शेष पृष्ठ 7 पर

The Heritage of Swami Dayanand Saraswati

- B. R. Sharma Vibhakar

Swami Dayanand Saraswati was born in Tankara of Maurvi State in Saurashtra province. On Falgun Badi Dasmi every year his birthday is celebrated with great zeal. On falgun badi chaudas or the day of shiva Ratri is regarded as a day of 'Rishi Bodhotsva'. As a teenager his soul got illumined. An idea struck in his mind that there must be some other Shiva except this one made of stone, who utterly failed to defend himself from the mischief of a mouse to pollute the pindi of Shiva and stale the offerings. Look at the Vishtha and urine of the mouse making it dirty!

Actually, there was a custom (still rampant) in those days that everyone might be on fast and awoke throughout the night known as the Shiva Ratri. Mool Shankar (Swami Dayanand's earlier name) kept on awaking and watching the Shiva-Ling. He found there was no activity of Shiva-Ling, it was just in an actionless posture. It was dead sure that it was lifeless. Mool Shankar came to this conclusion that it was not a real and living Shiva. It is a fallacy, a wrong notion, a blind concept. So damn this artificial Shiva! He was certainly illumined by projecting arguments and the lagic in his mind and he started to quest and question as to where the Real Shiva was! An idea of detachment overpowered his mind.

When his father Sh. Kishan saw Mool Shankar's tendency of detachment and renunciation, he wanted to get him enchained with marriage. But one, who is a searcher for the Truth, could be enchained so? On one night he left his house when he sensed his bondage. He met many hinderances but continued to pass over them to have an horizon of Knowledge. He met many scholars and saints and discussed many questions and secrets of yoga. He went to a renowned Sanyasi named Swami Poornanand Saraswati who gave him a name of Swami Dayanand Saraswati. Now he was Swami Dayanand Saraswati to be addressed. He studied the Vedic Literature which stands by the logical appreciation. He kept aside all that was intermixed. He was widely studied person. Some body suggested him to see and get guidance from a blind Sanyasi named Virjanand Swami, who was known as the bright and illumined 'Sun of Sanskrit Grammar', in Mathura city.

When Swami Dayanand a young sanyasi of sterdy body and logical brain knocked the door of Virjanand Swami, a voice came from inside with a question 'Who is there?' Swami Dayanand instantly replied, 'I have come to know sir this one as to who am I? In search of myself' I have come into your wisdom's light. The great Guru was astonished and sparkled and murmurred- 'Oh! welcome! I was really in search of such an appropriate pupil who could learn something important from me. So I am utterly pleased to have you, dear. What a fine, perfect and unparalled meeting between the Acharya and would be pupil it was!

Swami Dayanand started learning from Guru Deo Swami Virjanand Saraswati and enriched himself under his guidance. He was most dear to Acharya because of his unique calibre. He proved himself to be the truest and most failthful. He turned to the real path leading to the Real Shiva. He wrote many books and the Satyartha Prakash was one of them to declare its uniqueness with a commanding tone. Its every approach is everlasting and unbeaten. Nobody can challenge its contents. He in times of British yoke brought about the light and enthusiasm to show the path of independence to Indians and he produced many youngsters to fight the case of freedom. All the movements were imbibed with the essentials of his philosophy. Swedeshi Andolan is his product which lator on Gandhi Ji adopted. He taught us to be free without any bondage. Rana De was his first disciple.

He wrote many books in Hindi language as he declared at first that Dev Nagri (Hindi) will be the National language of Bharatvarsh.

He gave us all the perspectives of Vedic Religion and founded Arya Samaj, a body of logic and devotion. It was more helpful in achieving freedom. Having a national character there was a flood of establishing many Arya Samaj Mandirs almost in every town and city in the country and abroad. Through discussions held with other sects and matavalambis a norm of Vedic religion was set-up. They contain the glorious chapters of victories.

As a matter of fact, we have got this Maharshi Dayanand's vision which is regarded as the real heritage making a dialogue of our Vedic culture. He declared firmly 'Return to the Vedas'.

पृष्ठ 3 का शेष

वैदिक त्रैतवाद

इतना ही है कि चेतन ब्रह्म नित्य है और प्रकृति से बना हुआ जगत् अनित्य है, किन्तु दोनों ही हैं।

अद्वैतवादियों के समक्ष जब यह प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि यदि ब्रह्म एक है तो एक से अनेक कैसे हो गये। इसका उत्तर देते हुए वे कहते हैं कि माया के कारण एक से अनेक हो गये। फिर यदि यह प्रश्न किया जाता है कि माया है द्रव्य या गुण है। यदि माया को द्रव्य अर्थात् पदार्थ मानते हैं तो अद्वैत एक नहीं रहा फिर तो ब्रह्म और माया ये दो हो गये फिर तो द्वित्व अर्थात् द्वैत हो गया और यदि आप इसे गुण कहें तो यह प्रश्न होगा कि ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ दूसरा तत्व तो है ही नहीं, फिर यह गुण ब्रह्म का माना जायेगा तो क्या आप यह स्वीकार करेंगे कि माया के कारण ज्ञानी ब्रह्म अज्ञानी हो गया। यह कैसा गुण कि सूर्य जो प्रकाश का भण्डार है उसमें आप अंधेरा है यह सिद्ध करने का दु:साहस कर रहे हैं। क्योंकि माया के कारण ही ब्रह्म अपने को जीव समझता है, और प्रत्येक जीव अपना पृथक्-पृथक् अस्तित्व स्वीकार करता हैं। संसार के विविध पदार्थ माया के कारण ही दिखाई देते हैं। यदि माया को जड़ मानते हों या चेतन मानते हों तो यह प्रश्न उपस्थित होता है। यदि इसे आप जड़ कहते हैं तो बड़ा आश्चर्य है कि जड़ माया का चेतन ब्रह्म पर इतना प्रभाव कि नित्य आनन्द स्वरूप ब्रह्म अपने आपको अज्ञानी, दु:खी मानने लगा और यदि माया को चेतन मानते हैं तो फिर वही समस्या है कि दो चेतन हो जायेंगे। ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' यह सिद्ध नहीं होगा। ऐसे अनेक प्रश्न अद्वैतवादियों के समक्ष हैं जिनका वे समुचित समाधान नहीं कर पाते हैं।

वस्तुत: माया शब्द का प्रयोग श्वेताश्वेतर उपनिषद् (4/10) में प्रकृति के लिए हुआ है, वहां स्पष्ट ही लिखा है ''मायां तु प्रकृतिं विद्यात् मायाविनं तु महेश्वरम्''।। अर्थात् माया को प्रकृति समझो और मायावी को ईश्वर समझो। ब्रह्म और माया से अर्थात् ईश्वर और प्रकृति से सृष्टि की रचना होती है, यह स्पष्ट होता है।

जीव के विषय में अद्वैतवादियों का मत है कि ''जीवो ब्रह्मैव नापर:'' अर्थात् जीव ब्रह्म ही है अन्य नहीं है। इसलिए ''अहं ब्रह्मास्मि'' मैं ब्रह्म हूँ ऐसा उल्लेख उपनिषदों में है यह सिद्ध करते हैं। उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हैं कि जैसे सूर्य एक है और दस बर्तन में पानी भरकर रखा है तो दस बर्तनों में सूर्य की परछाई दिखाई देती है जैसे कि दस सूर्य हैं, किन्तु वास्तव में सूर्य तो एक ही है। वैसे ही ब्रह्म तो एक ही है किन्तु अन्त:करण में प्रतिबिम्बित होने वाले ब्रह्म को जीव कहा जाता है वस्तुत: वह जीव ब्रह्म ही है। किन्तु इस उदाहरण को देते समय वे भूल जाते हैं कि सूर्य और पानी का बर्तन दोनों एक दूसरे से दूर हैं इसलिए सूर्य की प्रतिच्छाया - (परछाई) पानी में पड़ती है। ब्रह्म तो सर्व व्यापक है उसकी दूरी न होने से परछाई का प्रश्न ही नहीं होता। फिर सूर्य स्थूल भौतिक पदार्थ है। क्या ब्रह्मा भी स्थूल और भौतिक पदार्थ है? फिर अन्त:करण वाला ब्रह्म जिसे जीव कहते हैं, वह अज्ञानी-दु:खी और अन्त:करण रहित ब्रह्म सर्वज्ञ और आनन्द स्वरूप है, इस प्रकार ज्ञानी ब्रह्म को अज्ञानी आनन्द के भण्डार को दु:खी ब्रह्म सिद्ध करते हैं, जिसका भी कोई समाधान नहीं है।

वेदादि शास्त्रों में जीवात्मा को ब्रह्म से पृथक् ही वर्णित किया है, जैसा कि कहा है .... ''त्यक्तेन भुंजीथा:'' 1140/1।। हे मनुष्य त्याग पूर्वक भोग कर। यदि जीवात्मा का पृथक अस्तित्व स्वीकार नहीं करेंगे तो क्या यह वेद मंत्र ब्रह्म के लिए आदेश देता है कि .... हे ब्रह्म/ तू त्याग पूर्वक भोग कर। ब्रह्म तो पूर्ण है उसमे कोई न्यूनता नहीं है। ''रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन:''।। अथर्ववेद 10/8/44 में ऐसा कहा है। वेदान्त दर्शन के प्रारम्भ में ही ''अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'' कहा है अर्थात् मैं ब्रह्म को जानने की इच्छा करता हूँ। यह इच्छा जीवात्मा ही कर सकता है। यदि जीवात्मा का अस्तित्व न मानेंगे तो क्या यह कहेंगे कि ब्रह्म, ब्रह्म को जानने की इच्छा करता है। ऐसा कहने वाला उपहास का ही पात्र होगा। अत: ईश्वर जीव और प्रकृति के इस ''त्रैतवाद'' के सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए, जो वेदानुकूल है।

- 309, मिल्टन अपार्टमेंट,
जुहू कोलिवाडा, मुम्बइ

आवश्यकताऽऽविष्काराणां जननी भवति

यानि वस्तूनि स्वप्नेऽपि नानुभूतानि, येषां स्वरूपस्य कल्पनाऽपि मानसं नावगाहते स्म। यदि प्रकृत्या तेषामावश्यकता कस्यापि कृते प्रसूयते, तानि वस्तूनि निर्मातुं स प्रवर्तते। अयमेवार्थो विवेच्यतया शीर्ष स्थाने लिखितस्यास्य प्रबन्ध विषयस्य।

यदि वयं पुरातन युगेतिहासेषु दृष्टिं क्षिपामः, यदा सभ्यता प्रारम्भोऽपि नासीत्, आविष्काराणाम् आवश्यकतामेव प्रसूता इदं स्पष्टमवगच्छाम्। तस्मिन् समये मनुष्याः पशुवत् वर्त्तन्तेस्म, पत्रेषु भुज्जतेस्म, वस्त्राणामुपयोगं नाज्ञासिषुः, वृक्ष शाखासु कुशकासादि सङ्कलायां वा धरायां अशयिषत् ते अस्त्राणामुपयोगे वह्नि कार्यं च नाविदन्। परमयं समयोऽपगतः क्रमशस्त एव मानवाः सीतातपवात्याभ्यः स्वं गोपायितुं गृहस्यावश्यकताम् अनुभवितुमारभन्त। ततश्च गृहनिर्माणप्रक्रिया मुदभावयन्, एवं वस्त्राणां स्थाने पशूनां चर्माणि समुपायुज्यत।

यदा च मनुष्याः परेभ्यः स्वस्य रक्षाया आवश्यकता मनसि विविदुः। भोजनार्थं पशूनां मांसं चापेक्षितवन्तस्तदनन्तरं प्रस्तर खण्डानि तेष्वेव संघृष्य नाना विधानि शस्त्राण्यस्त्राणि च निरमायिषु यैर्भेदनच्छेदनादि कार्यं सुकरं समपद्यत। कतिचित् सराणि चामयासमश्नतां तेषां जाते मुख वैरस्ये ते पाक–क्रियाया आवश्यकतां निरधारयन्, यतस्ते पाक प्रक्रियामनुसमधिषत।

उपर्युक्ताद् विवरणादिदमवधार्यते, किमपि वस्तु बलादिवाविष्कारयति। एवं हि वस्तुस्थितः कोऽपि किमपि वस्तुं विना कस्याश्चित् कठिनायां स्थितौ पतति, न चोपलभते प्रतिकारपथम् विमानायते च तदनुपलब्ध्या, ततः कंचनोपायं तत्प्रतीकारस्य सर्वात्मना चिन्तयति लभते च तदुपाया एवाविष्कार स्वरूपतया परिणमन्ते।

यदि मनुष्यः कश्चित् सर्वमपि मनोभिलषितं वस्तु सद्य एवाधिगच्छेत्, न प्रतिबद्धमनोरथतया खिद्येत। किमर्थं स व्याप्रियेत चेतसि, कुतश्च निर्गच्छेयुर्नवा पदार्थाः। परमत्र प्रतिक्षणं नूतनतामर्थयमाने जगति केवलं भोजनेनाच्छादनेनैव च मानवस्य तृष्णा नोपशाम्यति। स किमप्यन्यदपि कामयते, तदर्थमपि तस्य बुद्धिर्व्याप्रियते, ततोऽपि च बहव आविष्कारा जन्म लभन्ते।

अत्र जगति बहव ईदृशा अपि सन्ति पदार्थाः येषामाविष्कारा नावश्यकतापारवश्यकृतः, यथा वाष्पशक्तिविद्युदादिकाः पदार्थाः, तानन्तरापि मनुष्यां जीवनं न प्रत्यवध्यत। एवं च आविष्कारा आवश्यकताभिरेव जन्यन्त इति रिक्तवचः इति श्रुवतः प्रतिवक्तव्यं यतः मानवानामावश्यकता न केवलं कायिक्य एव भवन्ति, ते मानसिक भोजनं लब्धुं प्रयतन्ते। जातेऽपि जीवन धारणोपाये मानसिकं तद् भोजनं च तदीयाविरतबुद्धिव्यापार प्रभावेण समुपह्नियते, व्याप्रियन्ते, तदाऽऽविष्कारा जन्म गृह्णन्ति, शब्द प्रसारणयन्त्रम्, वायुयानम्, तडित्पत्रम् इत्यादय एवं प्रकारा एव।

एवं हि श्रूयते कुत्रापि पर्वत शिखरे समासीनः एकः काकः पिपासा क्षामकण्ठो भूमौ विवरे जलमपश्यत्, पर्वत शिखराश्च भुवमवतार परं भुवि समवतीर्णस्यातिस्य विवरस्थं जलं पातुं शक्तिर्नाभवत्। पिपासया पीडितश्च स इतस्ततः पश्यन्नपि किमपि वर्त्म नाद्राक्षीत्। जलं विना शुष्यदाननविवरस्य तस्य मनस्येक उपायः स्फुरति स्म। तत्र वर्तमानानि लघूनि प्रस्तर खण्डानि चंचुपुटेनादाय विले क्षप्तुमारभत, तेन विले भृते तत्रत्यं जलं बहिरभवत्। स काकः स्वां पिपासां शमितवान्।

दृश्यतामत्र कथायामाविष्कारः कथमावश्यकता बाधितेन काकेन व्यधीयत। यदि पक्षिषु एतादृशी स्थितिः, का कथा पुरुषाणाम्? 'थोमस एडिसन' महोदयः कियतांशेन बधिरोऽतः शब्दव्यापारान्वेषणप्रवृत्तश्चासीत्। अनुसंधान प्रवृत्तेनैव तेन 'फोनोग्राफ' नामकं यन्त्रमाविष्कृतं यद्धुना प्रतिपल्लब्धसंचारम् अस्माकमेव देशस्यालङ्कारः श्रीमान् इन्दुमाधवमलिक महोदयः स्वयं प्रवाहिकया पीड़ित आसीत्, स सुपचं भोजनं पक्तुं प्रकारमनुसन्दधान एकं यन्त्रमाविष्कृतवान् यद्धुना जनाः 'कुकर' इति नाम्ना व्यवहरन्ति।

एतावता समर्थितं साधु तथ्यमिदं यद् यदा कापि परमावश्यता पुमांसं व्याकुलयति, तदा तदीया मतिर्न विश्राममधिगच्छति। अविश्रान्तं व्याप्रियमाणा च समतिः सुप्तां स्वां शक्तिमुद्बोधयति। तत्प्रभावेणैव चालसाः सव्यापाराः दुर्बला बलवन्तः अविचारकाः विचार चतुराश्च सम्पद्यन्ते। जगतः सर्वोऽपि व्यापार आवश्यकता प्रसूत एव। याद्यवश्यकता दिनानुदिनं नैधैत, यथावस्थितमिदं जगत् पदपति पुरतो न स्पन्देत। प्रतिदिनं वर्धमाना जनसंख्याऽऽवश्यकतां वर्द्धयन्ती संहार कराण्यस्त्राण्यपि समुत्पादयति। अतः केनापि साधुसमर्थितमिदं यद् –

आविष्कारा आवश्यकतया जन्यन्ते।

पृष्ठ 5 का शेष

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का शताब्दी समारोह 7 व 8 नवम्बर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु जी ने कन्याओं की शिक्षा पर वेद मंत्रों के प्रमाण देकर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि कन्याओं की शिक्षा मानव निर्माण के लिए कितनी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि – 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषोवेद' की ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई उद्घोषणा के अनुसार माता बच्चे का पहला गुरु होती है और उसका विदुषी, धार्मिकी एवं प्रशस्ता होना आवश्यक है। प्राचीनकाल में अनेक विदुषियों ने अपनी विद्या एवं प्रतिभा से इतिहास रचे हैं जिनमें गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

डॉ. अन्नपूर्णा ने कन्या गुरुकुलों के माध्यम से कन्याओं को शिक्षित एवं संस्कारित किये जाने को आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द न आते तो नारी जाति को पैर की जूती के समान समझने वाले लोग कभी भी ऊपर न उठने देते।

स्वामी आदित्यवेश जी ने समाज के निर्माण महिलाओं की भूमिका पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि आज नारी के गौरव को सुरक्षित रखने के लिए आर्य समाज को एक बार फिर बड़ा अभियान चलाना होगा। नारियों को विज्ञापनों के माध्यम से तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। उनके ऊपर हो रहे अत्याचार हम सबके लिए एक चुनौती है। स्वामी आदित्यवेश जी ने समारोह में उपस्थित सभी पूर्व स्नातिकाओं को मंच के समक्ष आमंत्रित करके उन सबके साथ एक सामूहिक चित्र करवाया और सभी को स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र के द्वारा सम्मानित करवाया गया।

गुरुकुल पौंधा के आचार्य धनंजय जी ने भी नारी शिक्षा के महत्व पर अपना विद्वतापूर्ण उद्बोधन प्रस्तुत किया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपना संदेश शताब्दी समारोह में प्रस्तुत किया और कहा कि यह कन्या गुरुकुल आर्य समाज की एक प्रतिष्ठित संस्था है। इसकी पृष्ठभूमि तप व त्याग से परिपूरित है। अतः हम इस संस्था की उन्नति के लिए गम्भीरता से विचार करें ताकि अगली शताब्दी में यह संस्था कन्याओं की शिक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सके।

इस दो दिवसीय समारोह की सफलता पर सभी सहयोगियों एवं आगन्तुक अतिथियों का धन्यवाद गुरुकुल कांगड़ी के कुलसचिव डॉ. सुनील कुमार तोमर व मुख्य अधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम में गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विजेन्द्र शास्त्री अपने सभी अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं के साथ दल–बल सहित सम्मिलित हुए तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं कार्यकर्ता भी दोनों दिन समारोह में शामिल हुए। कन्या गुरुकुल की प्रधानाचार्या डॉ. संतोष कुमारी एवं उनकी पूरी टीम ने समारोह को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया और आगन्तुक महानुभावों के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की। समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव–दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रकाशन की तिथि : 23 नवम्बर, 2023 वैदिक सार्वदेशिक
पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- **www.facebook.com/SwamiAryavesh** व

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

आर्य समाज गोराना, जिला—बागपत का वार्षिक समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया
यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में हुए सम्मिलित
कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ब्रह्मपाल सिंह जी ने की

आर्य समाज गोराना, जिला—बागपत का वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम के साथ गत 3, 4 व 5 नवम्बर, 2023 को मनाया गया जिसमें आर्य समाज के यशस्वी स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क के भजनों की तीनों दिन धूम मची रही और श्रोताओं ने उन्हें अत्यन्त आनन्द के साथ सुना। उत्सव में प्रातः 8 से 11 बजे तक यज्ञ, भजन एवं प्रवचन, मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक भजन एवं व्याख्यान तथा रात्रि 7 से 10 बजे तक भजनों एवं व्याख्यानों का कार्यक्रम चला। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गांवों से भी प्रमुख आर्यजन सम्मिलित हुए और तीनों दिन विद्वानों के व्याख्यान भी निरन्तर होते रहे। आर्य समाज के युवा विद्वान् श्री विक्रम सिंह आर्य, श्री ओमपाल शास्त्री आदि ने भी कार्यक्रम में अपने प्रभावशाली प्रवचन प्रस्तुत किये।

5 नवम्बर, 2023 को स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। स्वामी जी ने "महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विश्व को देन" विषय पर अनेक तथ्य एवं उदाहरण प्रस्तुत करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी समग्र क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त अवैदिक मान्यताओं एवं परम्पराओं पर प्रबल प्रहार किया था और शास्त्रार्थ के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द जी ने समाज में प्रचलित बाल—विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, जाति प्रथा आदि कुरीतियों के विरुद्ध समाज को झकझोरा और महिलाओं को पढ़ने—लिखने तथा समाज में समान रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त करने का अधिकार दिलाया। स्वामी दयानन्द जी जन्मना जाति प्रथा के विरोधी थे और उन्होंने वैदिक

वर्ण व्यवस्था को जातिवाद के विरुद्ध मजबूत समाधान बताया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महान् वेदज्ञ, महान् योगी, महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता आन्दोलन के सूत्रधार थे। ऐसे मनीषी के 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष के दौरान सभी आर्यों को उनके विचार जन—जन तक पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का आर्य समाज के पदाधिकारियों ने शॉल भेंटकर सम्मान किया।

इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन श्री राजगुरु आर्य, श्री राजपाल शास्त्री, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री बुद्ध सिंह आदि का भी योगदान रहा। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह आर्य रठौड़ा, श्री अवनीश आर्य रठौड़ा, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, श्री तेजपाल सिंह बसी आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। उत्सव अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। विशेष रूप से आर्य समाज के पदाधिकारियों ने आर्य समाज के लिए गांव के बीच में एक सुन्दर सा भूखण्ड खरीदकर अगले वर्ष तक भवन निर्माण की महत्त्वपूर्ण योजना घोषित की जिसके लिए स्वामी जी ने भी विशेष साधुवाद प्रदान किया।

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में दिनांक 12 नवम्बर, 2023 (दीपावली) के अवसर पर श्री शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह का किया गया आयोजन
संन्यास आश्रम के प्रधान आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधन में दिनांक 12 नवम्बर, 2023 (दीपावली) के अवसर पर श्री शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्रीय सभा के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने की और मंच संचालन सभा के मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह पांचाल ने कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ओम प्रकाश आर्य रहे तथा मुख्य वक्ता स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसमें आर्यजनों तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। सर्वप्रथम मेरठ से पधारे युवा भजनोपदेशक आर्य संदीप गिल के शानदार भजनों का कार्यक्रम रहा। उसके पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी ने अपना ओजस्वी उद्बोधन दिया।

स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अन्तिम समय का चित्रण अपने मार्मिक एवं भावुकता पूर्ण शब्दों में करके उपस्थित श्रोताओं को भाव विह्वल कर दिया। स्वामी जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी ने अन्तिम समय में भी तत्कालीन एक युवा वैज्ञानिक गुरुदत्त विद्यार्थी को अपनी भाव—भंगिमा से प्रभावित करके आस्तिक बना दिया। महर्षि दयानन्द जी की वाणी और उनके व्यक्तित्व से हजारों लोग प्रभावित हुए जिन्होंने आर्य समाज तथा देश की सेवा में अपने जीवन को समर्पित किया। महर्षि दयानन्द जी की सहनशीलता, गम्भीरता एवं ईश्वर के प्रति समर्पण को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे और उन्हीं में गुरुदत्त विद्यार्थी भी एक नवयुवक था जो उनके इन गुणों से प्रभावित होकर आर्य समाज का एक स्तम्भ बना। अल्पायु में ही गुरुदत्त विद्यार्थी यद्यपि इस संसार से अपना नश्वर देह छोड़कर विदा हो गये किन्तु थोड़े काल में ही उन्होंने लाखों लोगों को प्रेरित करने का कार्य किया। स्वामी दयानन्द को अंग्रेजों के षड्यन्त्र के कारण जहर दिया गया। इस कार्य में पाखण्ड फैलाने वाले लोगों की भूमिका एवं षड्यन्त्र भी रहा। स्वामी जी ने कहा कि हमें ऋषि निवार्ण की बजाय ऋषि बलिदान के रूप में यह दिन बनाना चाहिए और महर्षि के अप्रतिम बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री सत्यवीर आर्य, कोषाध्यक्ष श्री गौरव सिंह आर्य व मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह पांचाल ने स्वामी आर्यवेश जी को सम्मानित किया। कार्यक्रम में आश्रम के व्यवस्थापक श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री एवं मीडिया प्रभारी श्री प्रवीण आर्य, आश्रम के उपाचार्य श्री जितेन्द्र जी, आश्रम के अन्तरंग सदस्य श्री वेद व्यास जी आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और सभी ने मिलकर प्रीति भोज किया।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।